जीवन विद्या

अध्ययन बिन्दु

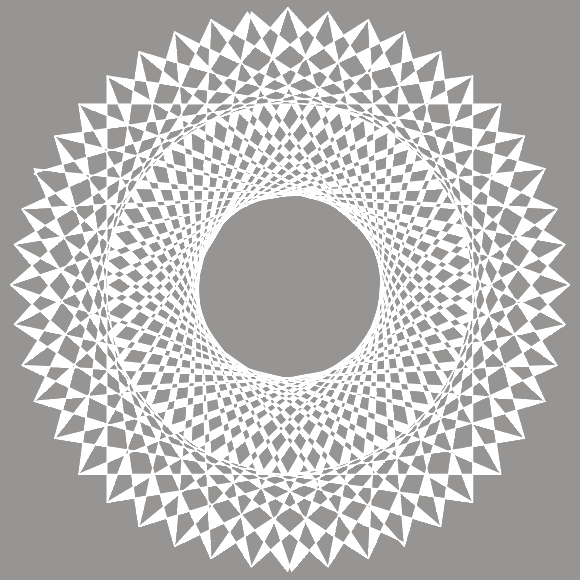

ए. नागराज

जीवन विद्या

(अध्ययन बिन्दु)

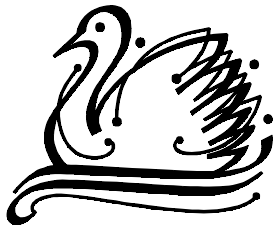

द्वारा - **ए. नागराज**
मध्यस्थ दर्शन

प्राक्कथन

मैं अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन अर्थात् मध्यस्थ-दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) पर आधारित जीवन-विद्या प्रबोधन कार्यकलाप के लिये बिन्दुओं को निश्चित करते हुये प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ। इस प्रयास में अपेक्षा यही है कि हर जीवन-विद्या प्रबोधक इंगित सभी बिन्दुओं पर ध्यान रखेंगे और सुस्पष्ट करेंगे।

मैं अपने में इस तथ्य को अनुभव किया हूँ कि हर मानव का ज्ञान, विज्ञान व विवेक सम्पन्न होना आवश्यक है, यही अपना-पराया के बीच कल्पित दीवारों को हटाने में सार्थक व सक्षम स्रोत है।

जीव चेतना से मानव चेतना में गुणात्मक परिवर्तन अति आवश्यक हो गया है, क्योंकि धरती बीमार हो गई, हर समुदाय असुरक्षा के चक्र में फंसता जा रहा है। इस अनिष्टकारी, सर्वनाशकारी परिस्थिति का कारण मानव में निहित अमानवीयता ही है। अमानवीयता ही जीव चेतना का स्वरूप है। इससे मुक्ति पाने के लिये अर्थात् मानव चेतना से सम्पन्न होने के लिये अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन, मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) ही इंगित होने के अर्थ में जीवन-विद्या कार्यक्रम है। इसे अध्ययनार्थ प्रस्तुत करते हुये स्वयं की सार्थकता को अनुभव करता हूँ।

भूमि स्वर्ग हो, मनुष्य देवता हो।
मानव धर्म सफल हो, नित्यु शुभ हो॥

प्रणेता एवं लेखक - ए. नागराज
मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद)
भजनाश्रम, नर्मदांचल
अमरकंटक (म.प्र.)

जीवन विद्या – अध्ययन बिन्दु

उद्देश्य –

- जीव चेतना से मानव चेतना में गुणात्मक परिवर्तन हेतु
- मानवीयता सहज आचरण प्रमाण हेतु
- सर्वतोमुखी समाधान-समृद्धि सहित - अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था रूप में प्रमाण हेतु

*** वर्तमान स्थिति ***	*** आवश्यकता ***
धरती ताप ग्रस्त	धरती संतुलित रहना
प्रदूषण	ऋतु संतुलित बना रहना
सभी मानव समुदाय असुरक्षित	धरती पर मानव का अक्षुण्ण रहना

– सम्पृक्तता –

व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण एक एक वस्तु -

भीगा	डूबा	घिरा
ऊर्जा सम्पन्नता बल सम्पन्नता चुम्बकीय बल सम्पन्नता सम विषम मध्यस्थ	क्रियाशीलता	नियंत्रण नियम संतुलन नियति
स्वत्व स्व=होना त्व=व्यवस्था सूत्र	आचरण त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी	नित्य वर्तमान
श्रम लक्ष्य(विश्राम) समाधान अभ्युदय मानव देवमानव	गति (गन्तव्य) आचरण पूर्णता दिव्यपद दिव्यमानव	परिणाम (अमरत्व) जीवन (चैतन्य इकाई)

अस्तित्व दर्शन

(1) **मूल बिन्दु –** सहअस्तित्व (सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति)

का अध्ययन।

(2) जागृत जीवन की दस क्रियायें

	जीवन बल	क्रिया	क्रिया	जीवन शक्ति
1.	आत्मा	अनुभव	प्रमाणिकता	प्रमाण
2.	बुद्धि	बोध	संकल्प	ऋतम्भरा
3.	चित्त	चिन्तन	चित्रण	इच्छा
4.	वृत्ति	तुलन	विश्लेषण	विचार
5.	मन	आस्वादन (मूल्यों का)	चयन (संबंधों की पहचान)	आशा

सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी ← **समाधान, समृद्धि संपन्न परिवार फलतः** → **अखण्ड समाज में भागीदारी**

(3) **प्रकृति में संपन्नता –**

पदार्थावस्था : ऊर्जा संपन्नता, क्रियाशीलता

प्राणावस्था : ऊर्जा संपन्नता, क्रियाशीलता, स्पन्दनशीलता

जीवावस्था : ऊर्जा संपन्नता, क्रियाशीलता, स्पन्दनशीलता,

आशा सम्पन्नता

ज्ञानावस्था : ऊर्जा संपन्नता, क्रियाशीलता, स्पन्दनशीलता, आशा सम्पन्नता, ज्ञान सम्पन्नता

(4) **अस्तित्व में चार अवस्थायें -**

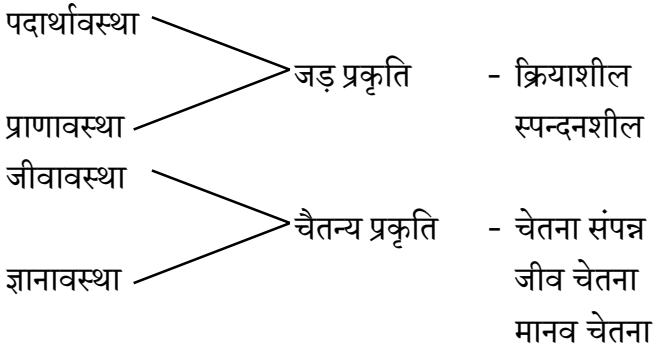

(5) **पदार्थावस्था में श्रम, गति व परिणाम**

प्राणावस्था में स्पंदन सहित श्रम गति परिणाम -

(6) परिणाम क्रम में अनेक यथास्थितियाँ, उपयोगिता, पूरकता सहित, अपने त्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदार।

(7) ठोस-विरल रूप के परमाणु, अणु के प्रजातियों से कोई भी धरती समृद्ध सम्पन्न होने के बाद, स्वयंस्फूर्त विधि से यौगिक क्रिया में प्रवृति फलस्वरूप रसायन संसार (क्षार, अम्ल, रचना तत्व, पुष्टि तत्व) का बनना।

इसका कारण - सहअस्तित्व नित्य प्रभावी

(8) इन चारों प्रकार के पदार्थ तत्व से संपन्न होकर धरती पर प्राणावस्था

का उद्भव होना। यह अवस्था बीज-वृक्ष विधि द्वारा आवर्तनशील परम्परा है। यही प्राण पद चक्र है।

(9) प्राणावस्था तृप्त होने के उपरांत प्राणावस्था के अवशेषों से स्वेदज संसार की निष्पत्ति (प्रकटन)

(10) परमाणु में विकास = गठनपूर्ण परमाणु = जीवन (चैतन्य) पद में

(11) स्वेदज संसार से अण्डज संसार का प्रकट होना।

(12) अण्डज संसार में गुणात्मक परिवर्तन विधि से अनेक प्रजातियों का प्रकटन होना। (यह भी उपयोगिता विधि-पूरकता विधि से सहअस्तित्व को प्रमाणित करते हुए स्पष्ट)

(13) अण्डज संसार गुणात्मक परिवर्तन विधि से पिण्डज संसार को संबद्ध किया जाना।

(14) अण्डज संसार से भूचर, नभचर, जलचर तीनों प्रकार हुए। पिण्डज संसार तीनों में प्रकट होते हुए भी भूचर, सर्वाधिक हैं। प्रत्येक परंपरा का सहअस्तित्व विधि (पूरकता-उपयोगिता विधि) से प्रकट होना।

(15) पिण्डज संसार में रचनायें श्रेष्ठता की ओर गुणात्मक परिवर्तन से अनेक परंपरायें स्थापित हुई। उनमें से एक परंपरा है- मानव शरीर।

(16) मानव शरीर और जीवन के संयुक्त रूप में है। शरीर के साथ परस्पर पहचानने के क्रम में नस्ल, रंग के आधार पर अनेक प्रजाति मान लिए हैं। जबकि मानव शरीर एक ही प्रजाति का रहता है - मानव

जाति एक है।

(इस तथ्य को 20वीं शताब्दी के बाद ही मनुष्य पहचानने योग्य हुआ। इसका प्रमाण अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान, मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद विधि से स्पष्ट हुआ।)

(17) **अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान ही अपने में सहअस्तित्व रूपी**

1. अस्तित्वदर्शन ज्ञान
2. जीवन ज्ञान
3. मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान का बोध मानव को होना है।

(18) **ऐसे ज्ञान का लोकव्यापीकरण करने के क्रम में जीवन विद्या कार्यक्रम है।**

- मानवीय शिक्षा संस्कार पूर्वक
- लोक शिक्षा के रूप में जीवन विद्या का कार्यक्रम
- परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सहज प्रमाण

(19) **जीवन विद्या में सर्वप्रथम ''जीवन ही दृष्टापद है'' होने का अध्ययन।**

(20) **दृष्टापद होने के फलस्वरूप 'जागृति' सहज प्रमाण होने का अध्ययन-**

- 20वीं शताब्दी तक मानव परंपरायें अनेक समुदाय में पहचानने की समीक्षा
- व्यक्तिवाद, समुदायवाद पनपना सर्वविदित है
- समीक्षा के फल में ''समुदाय समाज नहीं, समाज समुदाय नहीं'' इसका बोध होना।

(21) **मानव अपने मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी होना।**

(22) **अखण्ड समाज का स्वरूप**

व्यवहार सूत्र- व्याख्या विधि से स्पष्ट होना।

(23) **सार्वभौम व्यवस्था दस सोपानीय विधि से अध्ययन होना।**

(24) **मानव व्यक्ति के रूप में -**

समाधान संपन्नता

जागृति संपन्नता

(25) **परिवार के रूप में -**

वैभव = समाधान सम्पन्नता, समृद्धि सम्पन्नता

(26) **अखण्ड समाज के रूप में -**

- समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व
- मानव जाति एक धर्म एक
- सर्वतोमुखी समाधान धर्म में जीने का बोध

यह अखण्ड समाज का सूत्र है।

मानवधर्म = सुख = समाधान=सुख

समस्या = दुःख

(27) **जन प्रतिनिधि विधि से-परिवार सभाओं में व्यवस्था सहज कार्यक्रमों में भागीदारी करने का बोध।**

(28) **व्यवस्था सहज 5 आयामों का स्पष्ट बोध एवं हृदयंगम**

(1) शिक्षा-संस्कार व्यवस्था

(2) न्याय-सुरक्षा व्यवस्था
(3) उत्पादन-कार्य व्यवस्था
(4) विनिमय-कोष व्यवस्था
(5) स्वास्थ्य-संयम व्यवस्था

(29) **मानव संबंध, नैसर्गिक संबंधों का बोध कराने का कार्यक्रम।**

प्रधानतः मानव संबंध - सात
नैसर्गिक संबंध - तीन

मानव संबंध	**नैसर्गिक संबंध**
1. माता-पिता	1. जीवावस्था के साथ
2. पुत्र-पुत्री	2. प्राणावस्था के साथ
3. भाई-बहन	3. पदार्थावस्था के साथ
4. गुरु-शिष्य	
5. साथी-सहयोगी	
6. मित्र-मित्र	
7. पति-पत्नी	

(30) **संबंधों में निहित आशय मूल्यों का निर्वाह**

सात संबंध	**क्रिया**
माता-पिता	पोषण-संरक्षण
भाई-बहन	परस्पर अभ्युदय संयोग (सहयोग)
मित्र-मित्र	परस्पर पूरक
गुरु-शिष्य	प्रामाणिक-जिज्ञासु
साथी-सहयोगी	दायित्व-कर्त्तव्य
पुत्र-पुत्री	अभ्युदय, उपयोगिता, पूरकता
पति-पत्नी	यतीत्व, सतीत्व

(31) **नैसर्गिक संबंधों में नियम, नियंत्रण, संतुलन का बोध**

(32) **मानव संबंधों में नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज बोध सहित -**

जीवन मूल्य - चार
मानव मूल्य - छह
स्थापित मूल्य - नौ
शिष्ट मूल्य - नौ
वस्तु (उत्पादित) मूल्य - दो
का पूर्ण अध्ययन एवं बोध।

(33) **जीवन मूल्य**

समाधान = सुख
समाधान समृद्धि = शांति
समाधान समृद्धि अभय = संतोष
समाधान समृद्धि अभय सह अस्तित्व सहज प्रमाण = आनन्द

समाधान = क्यों, कैसे का उत्तर

समृद्धि	=	परिवार सहज आवश्यकता से अधिक प्राकृतिक नियम सहज उत्पादन
अभय	=	परस्पर न्याय सुलभता
सह-अस्तित्व	=	चारों अवस्थाओं में संतुलन
	=	नियम, नियंत्रण संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक जीना

(34) मानवीय चेतना संपन्न मानव संबंध में स्थापित व शिष्ट मूल्य निम्न है :-

स्थापित मूल्य	**शिष्ट मूल्य**
(1) कृत्तज्ञता - प्राप्त सहायता उपकार के प्रति स्वीकृति प्रसन्नता व निरंतरता की स्वीकृति	(1) सौम्यता - स्वयं स्फूर्त प्रणाली, पद्धति से स्वयं का नियंत्रण
(2) गौरव - विकसित (जागृत) को पहचान एवं उनके अनुरूप होने में उत्साह और निरंतरता	(2) सरलता - ग्रंथि (तनाव) रहित अंगहार एवं उसका प्रकाशन
(3) श्रद्धा - प्रामाणिकता, श्रेष्ठता की ओर प्रवृत्ति एवं संकल्प सहित गति	(3) पूज्यता - गुणात्मक परिवर्तन के लिए सक्रियता
(4) प्रेम - पूर्णता सहज प्रमाण; दया कृपा करूणा की संयुक्त अभिव्यक्ति। पूर्णता में नित्य रति, पूर्णता की सहज निरंतरता	(4) अनन्यता - जागृति पूर्णता के लिए योग्य पहचान, प्रमाण सहज निरंतरता
(5) विश्वास - संबंध निर्वाह निरंतरता सहित मूल्यों के निर्वाह की निरंतरता	(5) सौजन्यता-सहकारिता, सहयोगिता, पूरकता, उपयोगिता
(6) वात्सल्य - अभ्युदय सर्वतो-मुखी समाधान के अर्थ में पोषण संरक्षण	(6) सहजता - यथास्थिति सहज स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक, उत्पादन में स्वावलंबन प्रमाण निरंतरता
(7) ममता - स्वयं में, से, के लिए प्रतिरूपता सहज स्वीकृति, उत्सव निरंतरता	(7) उदारता - प्रतिफलापेक्षा विहीन कर्त्तव्य दायित्व वहन, तन मन धन अर्पण
(8) सम्मान - व्यक्तित्व एवं प्रतिभा में श्रेष्ठता सहज प्रमाण का पहचान, स्वीकृति - प्रमाणित होने की प्रवृत्ति	(8) सौहाद्रता - स्पष्टता से मूल्यांकन, क्रियाकलाप में स्पष्टता, सार्थकता
(9) स्नेह - संतुष्टि प्रसन्नता, उत्सव में, से, के लिए स्वयं स्फूर्त मिलन सान्निध्य की निरंतरता	(9) निष्ठा - मानवीयता पूर्ण विचार व्यवहार में निरंतरता, मानवीयता सहित व्यवस्था सहज वर्तमान

सभी संबंधों का निर्वाह ही व्यवस्था है। अभिव्यक्ति, संप्रेषणा सहज प्रकाशन = भाषा भाव मुद्रा अंगहार प्रक्रिया सहित संप्रेषणा = सटीक भाषा (अर्थ संगत) = चित्र लेख रूप में = स्वीकृत संप्रेषणा = अभिव्यक्ति = संबंधों का निर्वाह सहज प्रमाण। किशोरावस्था तक पहचान संबोधन और दस वर्ष के पश्चात् समझ सहित निर्वाह परस्परता में अपेक्षा - आवश्यकता।

(35) **संबंध निर्वाह मूल्य**

(1) **माता-पिता के साथ संतान का संबंध**
विश्वास निर्वाह और उसकी निरंतरता; गौरव, कृतज्ञता, प्रेम पूर्वक, सरलता, सौम्यता, अनन्यता भाव विधि सहित वस्तु सेवा समर्पण समेत तृप्ति - समाधान प्रमाण वर्तमान होना।

(2) **पुत्र-पुत्री (संतान का) के साथ माता-पिता अभिभावक - विश्वास निर्वाह की निरंतरता**
ममता, वात्सल्य, प्रेम, उदारता, सहजता, अनन्यता भाव वस्तु सेवा समर्पण के रूप में वर्तमान होना।

(3) **भाई-बहन संबंध में विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

सम्मान, गौरव, कृतज्ञता, प्रेम, सौहाद्रता, सरलता, सौजन्यता, अनन्यता भाव पूर्वक वस्तु सेवा समर्पण के रूप में है।

(4) **गुरु शिष्य के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

प्रेम, वात्सल्य, ममता, अनन्यता, सहजता, उदारता भाव पूर्वक वस्तु सेवा समर्पण के रूप में वर्तमान

(5) **शिष्य गुरु के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

गौरव, कृतज्ञता, सम्मान, प्रेम का भाव, सरलता, सौजन्यता, सहजता, अनन्यता का भाव पूर्वक जिज्ञासा सहित वस्तु और सेवा का अर्पण-समर्पण रूप में है।

(6) **पति-पत्नी के परस्परता में विश्वास निर्वाह की निरंतरता**
स्नेह, गौरव, सम्मान, प्रेम, निष्ठा, सरलता, सौहाद्रता, अनन्यता का भाव पूर्वक वस्तु सेवा समर्पण के रूप में।

(7) **साथी सहयोगी के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**
स्नेह, ममता, दया, सहज निष्ठा, उदारता, दायित्व का कर्त्तव्य सहित वस्तु व सेवा प्रदान करने के रूप में।

(8) **सहयोगी साथी के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

गौरव, सम्मान, कृत्तज्ञता, सहजता, सरलता, सौहाद्रता, सौजन्यता भाव सहित सेवा समर्पण के रूप में है।

(9) **मित्र-मित्र के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

स्नेह, सम्मान, प्रेमपूर्वक निष्ठा, सौहाद्रता, अनन्यता का भाव सहित वस्तु व सेवा समर्पण अर्पण के रूप में।

(10) **परिवार व्यवस्था में विश्वास निर्वाह की निरंतरता -**

मानवीयता पूर्ण आचरण सहित संबंधों का निर्वाह समेत किया गया व्यवहार कार्य - परिवार में, से, के लिए पोषण, संरक्षण समाज गति के लिए आवश्यकता से अधिक उत्पादन संपन्नता उपयोग-सदुपयोग प्रयोजन पूर्वक व्यवस्था प्रमाण वर्तमान - वैभव है।

(36) **पंचकोटि के मानव -** तीन वर्ग में -

1. अमानव - पशुमानव, राक्षसमानव
2. मानव - मानवीयतापूर्ण मानव
3. अतिमानव - देवमानव, दिव्य मानव

(37) सह अस्तित्व नित्य वर्तमान प्रकृति स्थितिपूर्ण सत्ता में सम्पृक्त
स्थितिशील- प्रकृति अर्थात पूर्णता में गर्भित प्रकृति
व्यापक सत्ता में जड़ -चैतन्य प्रकृति नित्य वर्तमान

(38) **मानव- ज्ञानावस्था में होते हुए**

- भ्रांति पद में - व्यक्तिवाद, समुदायवाद
- अमानव अर्थात् भ्रांतिपद में मानव दो प्रकार से पशु मानव, राक्षस मानव
- भय, प्रलोभनवश भ्रांति पद में
  (1) अधिमूल्यन
  (2) अवमूल्यन
  (3) निर्मूल्यन दोष वश

अमानव का स्वभाव → जीव चेतना वश हीनता, दीनता, क्रूरता
प्रवृत्ति → चार विषय प्रवृत्ति (आहार, निद्रा, भय, मैथुन)
दृष्टि → प्रिय हित लाभ
कार्यक्रम- सुविधा, संग्रह
पशु मानव = दीनता प्रधान
राक्षस मानव = क्रूरता प्रधान

(39) **मानव चेतना सम्पन्न**
मानव स्वभाव = धीरता, वीरता, उदारता
दृष्टि = न्याय
प्रवृत्ति = मानवीय परिवार

(40) **देव पद सहज मानव = जागृत मानव**
जागृत मानव स्वभाव = धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा

दृष्टि = धर्म (सर्वतोमुखी समाधान)
प्रवृत्ति = मानवीय व्यवस्था
अखण्डता समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था

(41) **दृष्टापद प्रतिष्ठा - (दिव्य मानव)**
जाग्रति पूर्ण मानव स्वभाव = धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा
दृष्टि = सत्य प्रधान
प्रवृत्ति = सर्वशुभ
सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में अखण्डता - सूत्र व्याख्या सार्वभौमता
सहज वर्तमान में प्रमाण

(42) **दृष्टा पद प्रतिष्ठा सहज जागृति प्रमाण सम्पन्नता**
मानव ही दृष्टा, कर्त्ता, भोक्ता- जागृति पूर्वक
कार्य व्यवहार करने में स्वतंत्र फल भोगने में स्वतंत्र
जागृति पूर्वक किया गया सम्पूर्ण कर्म फल नियति विधि सहज होने के आधार पर फल भोगने में स्वतंत्र
नियति विधि का तात्पर्य -पूरकता, उपयोगिता सहज प्रमाण।

सकारात्मक फल आबंटन स्वीकार होता है; नकारात्मक फल कोई स्वीकार नहीं करता है।

(43) धरती अखण्ड — राष्ट्र अखण्ड
मानव समाज अखण्ड — राज्य अनेक
सभी राज्य अखण्डता सार्वभौमता के अर्थ में सार्थक

पूरकता उपयोगिता विधि से धरती पर वैभवित चारों अवस्थाओं में संतुलन

(44) (1) **अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिन्तन पूर्वक सहअस्तित्व वादी विधि से** :
- परिवार व्यवस्था में विश्वास निर्वाह निरंतरता
परिवारजन-समझदार-ज्ञान विज्ञान विवेक संपन्न
परिवार में - मानवीयतापूर्ण आचरण सहित समाधान समृद्धि सहज प्रमाण में स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार सम्पन्नता व वैभव निरंतरता अनूकुल परिस्थिति
वर्तमान में विश्वास (अभय) सूत्र

- **वर्तमान में उपयोगिता पूरकता सहज अनूकुल परिस्थितियाँ :-**

(1) मानवीय शिक्षा संस्कार सुलभता

(2) न्याय सुरक्षा सुलभता

(3) उत्पादन कार्य सुलभता

(4) विनिमय कोष सुलभता

(5) स्वास्थ्य, संयम सुलभता - सहज ज्ञान विज्ञान

विवेक सुलभता ही अखण्डता सार्वभौमता सहज सूत्र दस सोपानीय व्यवस्था व्यक्त हो।

हर जागृत मानव-जीने में जीवन मूल्य के अर्थ में मानव लक्ष्य प्रधान है

अखण्ड समाज - सूत्र व्याख्या रूपी व्यवहार में - स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य प्रधान - वैभव - सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या रूपी भागीदारी में।

मानव मूल्य प्रधान-प्रमाण वर्तमान-वैभव है

हर समझदार मानव जीवन मूल्य के अर्थ में मानव लक्ष्य प्रमाणित करना ही प्रमाण वर्तमान-परंपरा है। हर परिवार मानव प्रधानतः स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य सहित अखण्ड राष्ट्र समाज के वैभव के अर्थ में प्रमाण परंपरा वैभव है।

जाग्रत मानव परंपरा में -

जीने के वैभव में - जीवन मूल्य के अर्थ में मानव लक्ष्य प्रधान।

अखण्ड समाज वैभव में - स्थापित व शिष्ट मूल्य प्रधान।

सार्वभौम व्यवस्था सहज वैभव में मानव मूल्य प्रधान है।

44-2 (1) **अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन पूर्वक सहअस्तित्व वादी विधि से -**

परिवार समूह सभा
= दस परिवार से निर्वाचित
= दस जन प्रतिनिधि परिवार समूह सभा
मानवीयतापूर्ण आचरण सम्पन्न
= परिवार अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या

परिवार सभा, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या अनुसार पंचमुखी कार्यक्रम प्रवृत्ति यथा

(1) मानवीय शिक्षा-संस्कार कार्य

(2) मानवीय न्याय-सुरक्षा कार्य

(3) मानवीय उत्पादन-कार्य

(4) मानवीय विनिमय-कार्य

(5) मानवीय स्वास्थ्य-संयम कार्य

प्रवृत्तियों का परीक्षण, निरीक्षण, समृद्धिकरण, आंकलन कर्त्तव्य संयुक्त सत्यापन

(44-2-2) **अस्तित्व मूलक केंद्रित चिंतनपूर्वक सहअस्तित्ववादी व्यवस्था विधि से-**

हर परिवार मानव में छह महिमा, यथा -

(i) स्वयं में विश्वास

(ii) श्रेष्ठता के प्रति सम्मान करने में विश्वास

(iii) स्वप्रतिभा में विश्वास

(iv) प्रतिभा के अनुसार व्यक्तित्व में विश्वास

(v) व्यवहार में सामाजिक

(vi) उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावलंबन

सहज प्रवृत्ति प्रमाण से निरीक्षण, परीक्षण, आंकलन, आवश्यकतानुसार समृद्धिकरण संयुक्त सत्यापन

(44-2-3) **अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन पूर्वक सहअस्तित्ववादी व्यवस्था विधि से मोहल्ला, ग्राम, परिवार सभा**

दस परिवार समूह सभा में से निर्वाचित प्रतिनिधि

दस जन प्रतिनिधि परिवार सभा से मनोनीत पाँच समितियाँ, यथा -

(i) मानवीय शिक्षा-संस्कार समिति

(ii) मानवीय न्याय-सुरक्षा समिति

(iii) मानवीय उत्पादन-कार्य समिति

(iv) मानवीय विनिमय-कोष समिति

(v) मानवीय स्वास्थ्य-संयम समिति

मोहल्ला, ग्राम परिवार सभा सहज प्रयोजनों के अर्थ में - और दस परिवार समूह सहज आवश्यकता के अनुसार समिति में कार्यरत व्यक्ति का दायित्व निश्चयन रहेगा

(44-2-4) **अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन पूर्वक सह अस्तित्ववादी व्यवस्था विधि से**

मोहल्ला, ग्राम परिवार सभा

दस परिवार समूह सभा में से प्रत्येक सभा सदस्यों का संयुक्त सत्यापन

प्रत्येक समिति सदस्यों का संयुक्त सत्यापन और ग्राम मोहल्ला समिति स्वयं आवश्यकता अनुसार परीक्षण निरीक्षण पूर्वक -

सौ परिवारों का - समझदारी सम्पन्नता सहज यथास्थिति के ज्ञान सहज रूप में, ईमानदारी सहज यथास्थिति को विवेक व विज्ञान सहज रूप में, जिम्मेदारी सहज यथास्थिति का मानव संबंधों का पहचान

नैसर्गिक संबंध का पहचान, सहज रूप में भागीदारी सहज यथा स्थिति को मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी, उपयोगिता, पूरकता सहज रूप में

(44-2-5) **अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतनपूर्वक सहअस्तित्ववादी विधि से-**

ग्राम मोहल्ला परिवार सभा -

जन शक्ति चेतना महिमा प्रवृत्ति व निष्ठा सहज वैभव का निरीक्षण परीक्षण पूर्वक सत्यापन

जन शक्ति को समझदारी के रूप में -

मानव चेतना सहज समझदारी ईमानदारी सहज संयुक्त रूप में -

महिमा को - छह स्वरूप में कथित

प्रवृत्ति का - पंचमुखी कार्यक्रम

के आधार पर पहचान

मूल्यांकन और सत्यापन

मानवीय शिक्षा-नीति का प्रारूप

1. आधार -

1-1 यह प्रारूप मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) पर आधारित है। यह दर्शन चार भागों में है -

1. मानव-व्यवहार-दर्शन
2. मानव-कर्म-दर्शन
3. मानव-अभ्यास-दर्शन
4. मानव-अनुभव-दर्शन

2. मानवीय शिक्षा प्रवर्तन कारण -

2-1 वर्तमान में मनुष्य में पाई जाने वाली सामाजिक (धार्मिक) आर्थिक एवं राजनैतिक विषमताएं ही समरोन्मुखता का कारण है।

3. प्रस्तावना-

जीव चेतना से मानव चेतना में परिवर्तन

3-1 मानवीयता की सीमा में धार्मिक (सामाजिक) आर्थिक राज्यनैतिक समन्वयता रहेगी, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य प्राप्त अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा चाहता है। अर्थ की सदुपयोगात्मक नीति ही धर्म नीति, सुरक्षात्मक नीति ही राज्यनीति है। अर्थ के सदुपयोग के बिना सुरक्षा एवं सुरक्षा के बिना सदुपयोग सिद्ध नहीं है। इसी सत्यतावश मानव धार्मिक, आर्थिक राज्यनैतिक पद्धति व प्रणाली से सम्पन्न होने के लिये बाध्य है।

4. उद्देश्य -

4-1 मानवीय चेतना वादी शैली को स्थापित करना।

4-2 मानवीयता की अक्षुण्णता हेतु मानवीय संस्कृति, सभ्यता तथा उसकी स्थापना एवं संरक्षण हेतु विधि व व्यवस्था का अध्ययन पूर्वक प्रमाणित कराना है इससे मनुष्य के चारों आयामों (व्यवसाय, व्यवहार, विचार एवं अनुभूति) तथा पांचों स्थितियों (व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्र) की एक सूत्रता, तारतम्यता एवं अनन्यता प्रत्यक्ष हो सकेगी। फलस्वरूप समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद एवं अनुभवात्मक अध्यात्मवाद मनुष्य जीवन में चरितार्थ एवं सर्वसुलभ हो सकेगा। यही प्रत्येक मनुष्य की प्रत्येक स्थिति में बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि है और साथ ही यह मानव का अभीष्ट भी है।

4-3 व्यक्तित्व एवं प्रतिभा के संतुलित उदय को पाना।

4-4 समस्त प्रकार की वर्ग भावनाओं को मानवीय चेतना में परिवर्तन करना।

4-5 सह-अस्तित्व एवं समाधानपूर्ण सामाजिक चेतना को सर्व सुलभ करना।

4-6 प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही न्याय का याचक है एवं सही करना चाहता है। उसे न्याय प्रदायी क्षमता तथा सही करने की योग्यता प्रदान करना।

4-7 प्रत्येक मनुष्य जीवन में अनिवार्यता एवं आवश्यकता के रूप में पाये जाने वाले बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि की समन्वयता को स्थापित करना।

4-8 शिक्षा प्रणाली, पद्धति एवं व्यवस्था की एक सूत्रता को मानवीयता की सीमा में स्थापित करना।

4-9 प्रकृति में विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति एवं इतिहास के आनुषंगिक मनुष्य, मनुष्य जीवन लक्ष्य, जीवन में समाधान तथा जीवन के कार्यक्रम को स्पष्ट तथा अध्ययन सुलभ करना।

4-10 विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय, शाला एवं शिक्षा मंदिरों की गुणात्मक एकता एवं एक-सूत्रता को स्थापित करना।

4-11 उन्नत मनोविज्ञान के संदर्भ में निरन्तर शोध एवं अनुसंधान व्यवस्था को प्रस्थापित करना।

4-12 प्रत्येक विद्यार्थी और व्यक्ति को अखण्ड समाज के भागीदार के रूप में प्रतिष्ठित करना।

4-13 शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अभिभावक की तारतम्यता को व्यवहार शिक्षा के आधार पर स्थापित करना।

4-14 विगत वर्तमान एवं आगत पीढ़ी की परम्परा के प्रत्येक स्तर में तारतम्यता, एकसूत्रता, सौजन्यता, सहकारिता, दायित्व तथा कर्त्तव्यपालन योग्य क्षमता का निर्माण करना।

4-15 मानवीय संस्कृति, सभ्यता विधि एवं व्यवस्था सम्बन्धी शिक्षा को सर्वसुलभ बनाना।

4-16 प्रत्येक मनुष्य में अधिक उत्पादन एवं कम उपभोग योग्य क्षमता को प्रस्थापित करना।

4-17 व्यक्तित्व व प्रतिभा सम्पन्न स्थानीय व्यक्तियों के सम्पर्क में शिक्षार्थी एवं शिक्षकों को लाने की व्यवस्था प्रदान करना।

5 वस्तु विषय प्रणाली -

5-1 शिक्षा के सभी विषयों को सभी स्तरों में उद्देश्य की पूर्ति हेतु बोधगम्य एवं सर्व सुलभ बनाने, सार्वभौम नीतित्रय (धार्मिक, आर्थिक, राज्यनैतिक) में दृढ़ता एवं निष्ठा स्थापित करने तथा वर्तमान में

पढ़ाये जाने वाले प्रत्येक विषय को समग्रता से सम्बद्ध रहने के लिये :-

क- विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष का।

ख- मनोविज्ञान के साथ संस्कार पक्ष का।

ग- दर्शनशास्त्र के साथ क्रिया पक्ष का।

घ- अर्थशास्त्र के साथ प्राकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य की सदुपयोगात्मक एवं सुरक्षात्मक नीति पक्ष का।

च- राज्यनीति शास्त्र के साथ मानवीयता के संरक्षणात्मक तथा संवर्धनात्मक नीतिपक्ष का।

छ- समाज शास्त्र के साथ मानवीय संस्कृति व सभ्यता पक्ष का।

ज- भूगोल और इतिहास के साथ मानव तथा मानवीयता का।

झ- साहित्य के साथ तात्विक पक्ष का अध्ययन अनिवार्य है।

6. तकनीकी शिक्षण -

6-1 उत्पादन एवं निर्माण शक्ति की विपुलता के लिए निपुणता एवं कुशलता को पूर्णतया प्रशिक्षित कराने के लिए समृद्ध प्रणाली, व्यवस्था एवं अध्ययन रहेगा जिससे मनुष्य की सामान्य आकाँक्षा एवं महत्वाकाँक्षा से सम्बन्धित वस्तुओं का निर्माण सुगमता पूर्वक हो सके।

6-2 तकनीकी शिक्षण के साथ सामाजिकता तथा व्यक्ति में निष्ठा को व्यवहारिक रूप देने की व्यवस्था एवं प्रणाली अध्ययन के रूप में रहेगी।

6-3 शिक्षा के इस स्तर में अतिमानवीयता पूर्ण जीवन की संभावना को स्पष्ट करने योग्य अध्ययन रहेगा।

6-4 प्रत्येक विद्यार्थी को उत्पादन क्षमता में निष्णात बनाने के लिए अध्ययन होगा, जिससे अधिक उत्पादन एवं कम उपभोग सम्पन्न हो सके।

6-5 तकनीकी अध्ययन के साथ व्यवहारिक अध्ययन अनिवार्य रूप में रहेगा जिससे प्रत्येक व्यक्ति उद्यमशील एवं सामाजिक सिद्ध हो सके।

6-6 कृषि उद्योग व स्वास्थ्य संबंधी पूर्ण तकनीकी शिक्षा प्रत्यक्ष रूप से रहेगी न कि औपचारिक रूप में रहेगी।

7 शिष्ट मंडल-

7-1 प्रत्येक राष्ट्रीय स्तर में एक शिष्ट मंडल रहेगा जिसमें शोध एवं अनुसंधान कर्ताओं का समावेश रहेगा। यही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शिष्टमंडल शिक्षा नीति में प्रणाली तथा पद्धति की पूर्णता एवं दृढ़ता के प्रति दायित्व वहन का सजगता पूर्वक निर्वाह करेगा।

7-2 यही मंडल वैध सीमा में शिक्षण संस्थाओं के दायित्वों का निर्धारण, दिशा-निर्देश, पद्धति तथा प्रणाली संबंधी आदेश देने का अधिकारी होगा।

7-3 इनके द्वारा दी गई प्रस्तावनायें शासन-सदन द्वारा सम्मति पाने के लिए बाध्य रहेगी।

7-4 शिक्षा सम्बन्धी गुणात्मक परिवर्तन के लिए उपयुक्त प्रस्तावनाधिकार इसी मंडल में समाहित रहेगा।

7-5 व्यक्तिगत रूप में प्राप्त प्रस्तावनाओं को अवगाहन करने की व्यवस्था रहेगी। साथ ही उनके लिये सम्मान व पुरस्कार प्रदान करने की व्यवस्था भी रहेगी। जिससे व्यक्तिगत प्रतिभा के प्रति विश्वास हो सके।

7-6 प्रत्येक राष्ट्र का शिष्ट मंडल मानवीयता की सीमा में ही शिक्षा नीति, प्रणाली एवं पद्धति का प्रस्ताव करेगा जिससे मंडलों में परस्पर विरोध न हो सके।

7-7 शिक्षा की सार्वभौमिकता की अक्षुण्णता के लिये अंतर्राष्ट्रीय शिष्ट मंडल रहेगा जिससे अखण्ड समाज की निरंतरता बनी रहे।

8 व्यवस्था-

8-1 प्रत्येक शिक्षण संस्था अपने क्षेत्र में प्रौढ़ व्यक्तियों को साक्षर बनाने तथा प्रत्येक बालक-बालिका को शिक्षा प्रदान करने के लिए उत्तरदायी होगा।

8-2 प्रत्येक पद में दायित्व शिष्ट मंडल द्वारा निर्धारित रहेगा।

8-3 संस्थाओं का दायित्व व निर्वाह-पद्धति, प्रत्येक शिक्षण संस्था अपने कार्यक्षेत्र में पाई जाने वाली सामाजिक, आर्थिक, राज्यनैतिक और व्यवहारिक व्यवस्था की परस्परता में समस्याओं का सर्वेक्षण करने की व्यवस्था करेगी। साथ ही वैध प्रणाली पद्धति नीति व व्यवस्था का पालन करने के लिए उत्तरदायी रहेगी।

8-4 स्थानीय स्थिति के चित्रणाधिकार का दायित्व स्थानीय संस्था का होगा।

8-5 प्रत्येक सर्वेक्षण पूर्ण चित्रण स्तर के अधिकारियों द्वारा सम्पन्न किया जायेगा उसका परीक्षण करने का अधिकार उनसे वरिष्ठ अधिकारी को होगा। जिससे ही-

भूमि स्वर्ग होगी। मनुष्य ही देवता होंगे॥
धर्म सफल होगा। नित्य मंगल ही होगा॥

ग्रन्थों की सूची

दर्शन

1. मानव व्यवहार दर्शन
2. मानव अनुभव दर्शन
3. मानव अभ्यास दर्शन
4. मानव कर्म दर्शन

वाद

1. समाधानात्मक भौतिकवाद
2. व्यवहारात्मक जनवाद
3. अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

शास्त्र

1. व्यवहारवादी समाजशास्त्र
2. आवर्तनशील अर्थचिंतन
3. मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

अन्य

1. परिभाषा संहिता
2. जीवन विद्या - एक परिचय
3. मानवीय संविधान का प्रारूप
4. परिवार मानव (मासिक पत्रिका)

ग्रन्थ प्राप्ति स्थल

श्री एन. एस. पुराणिक (0771) 2428391
(मध्यस्थ-दर्शन वाङ्मय हेतु मुख्य वितरण केन्द्र)
ए-1 प्रोविजन स्टोर्स के पास, न्यू शान्तिनगर,
पो. - शंकरनगर, जिला - रायपुर (म.प्र.)

डॉ. रणसिंह आर्य (01342) 287511
जीवन विद्या प्रतिष्ठान, गोविन्दपुर (खारी) 287060
वाया - झालू, बिजनौर, उ. प्र. - 246728.

श्री राजन शर्मा (07821) 258222
अभ्युदय संस्थान ग्राम - अछोटी (0771) 2250502
जिला - दुर्ग (छत्तीसगढ़)

श्री प्रेम सिंह (05192) 227368
बड़ोखर (खुर्द), जिला-बांदा (उ.प्र.)

श्री यशवंत कुमार सिंधु (स्व. सेनानी) (07673) 32034
द्वारा - अवधेश श्रीवास्तव, आर.बी./22बी,
सिविल लाइन्स - नागौद, जिला-सतना (म.प्र.)

श्री डॉ. आर.आर. गौड़ (011) 26851352
राष्ट्रीय मूल्य शिक्षा केन्द्र, आई.आई.टी. नई दिल्ली 26591908

श्री पवन गुप्ता (0135) 2632904
''सिद्ध'' कैम्पटी गांव, मसूरी (उत्तरांचल) (01376) 224203

श्री अशोक सिरोही (05921) 241479
जीवन विद्या अध्ययन संस्थान
ग्राम - टांडा (बिलारी) जिला-मुरादाबाद (उ.प्र.)

श्री सुरेन्द्र पाठक (0755) 5284235
ई-5/189, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)

श्री गणेश बागड़िया (0512) 2581669
मानवीय शिक्षा संस्कार संस्थान, कानपुर (उ.प्र.) 2780780

श्री भारत भूषण त्यागी (05736) 271869
चैतन्य शिक्षा संस्थान, ग्रा.-बिहटा (स्याना) जिला-बुलन्दशहर (उ.प्र.)